जनवाचन आंदोलन

जन वाचन आंदोलन का मकसद है। किताबों को गाँव-गाँव ले जाना, इन किताबों को नवपाठकों के बीच पढ़कर सुनाना और पढ़वाकर सुनना। गाँव की जनता के पास आज भी पढ़ने-लिखने के लिए स्तरीय किताबें नहीं हैं और जो हैं भी वे बेहद महँगी हैं। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ग्रामीण जन तक कम कीमत और सरल भाषा में देशभर के मशहूर लेखकों की किताबें पहुँचाना चाहती है, ताकि गाँव-गाँव में जन वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति पैदा हो सके। संपूर्ण साक्षरता अभियान से जो नवपाठक निकलकर सामने आए हैं, वे अपने साक्षरता के अर्जित कौशल को बनाए रख सकें, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर बढ़े और वे जागरुक होकर अपने बुनियादी हकों की लड़ाई के लिए लामबंद हो सकें, यह इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य है। भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए गाँव के लोग आगे आएँ, इसके लिए भी इस तरह की चेतना का विकास जरूरी है। साक्षरता केवल अक्षर सीखने का काम नहीं है, यह पूरी दुनिया को जानने का काम है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति
मूल्य : 10 रुपये

ख़ोजा नसरुद्दीन भारत में

रिज़वान ज़हीर उस्मान

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

ख़ोजा नसरुद्दीन भारत में: रिज़वान जहीर उस्मान
Khoja Nasruddin Bharat Me : Rijwan Zahir Usman

नवपाठकों के लिए भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© सर्वाधिकार सुरक्षित
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

पुस्तकमाला संपादक: असद ज़ैदी और विष्णु नागर
कार्यकारी संपादक: संजय कुमार
Series Editor : Asad Zaidi and Vishnu Nagar
Executive Editor : Sanjay Kumar

रेखांकन: रत्नाकर
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 1997, 2000, 2006

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे जन वाचन आंदोलन के तहत किया गया है ताकि लोगों में पढ़ने-लिखने की आदत पैदा हो सके। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गांव के पाठकों को सस्ती और सरल भाषा में देश के मशहूर रचनाकर्मियों द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पुस्तकें उपलब्ध करवाना है। खासकर उन नवपाठकों के लिए जो देशभर में चलाए गए संपूर्ण साक्षरता अभियान से निकलकर सामने आए हैं।

मूल्य: 10 रुपए

Published by ***Bharat Gyan Vigyan Samithi****,* ***Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017, Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773,*** **email: bgvs@vsnl.net**

ख़ोजा नसरुद्दीन भारत में

दुनिया भर में मशहूर ख़ोजा नसरुद्दीन का भारत आगमन भी सनसनीखेज रहा। रूढ़ियों और अंधी आस्थाओं के खिलाफ उसने भारत में भी विरोध किया। सीधा, सरल और मानवता का मित्र, खोजा भारत की दुखी महिलाओं को देखकर उनके साथ हो लिया। फिर तो रोचक घटनाएँ घटती ही चली गईं।

– रिज़वान जहीर उस्मान

ख़ोजा नसरुद्दीन भारत में

भारत के राजा को अमरीका के राजा ने टेलीफोन कर के सावधान किया कि आदतन तोड़-फोड़ करने वाला ख़ोजा नसरुद्दीन भारत की सीमा में दाखिल हो चुका है।

लेकिन भारत का राजा अमरीका के चक्कर में नहीं आया। क्योंकि कल ही जापान के राजा ने भारत के राजा को टेलीफोन पर भगवान बुद्ध की कसम खाकर बताया कि उसने ख़ोजा नसरुद्दीन को अपनी आँखों के सामने सूली पर लटका दिया है। लटकाने के बाद डाक्टरों ने उसके शरीर की जाँच करके बताया था कि ख़ोजा मर चुका है। भारत का राजा अभी पूरी तरह सोच भी नहीं पाया था कि अमरीका के राजा की बात का क्या जवाब दे कि तभी ब्रिटेन की महारानी का फोन आ गया। महारानी ने कहा कि खोजा को ब्रिटेन की पुलिस ने एक मुठभेड़ में मार गिराया है। उसकी लाश जनता को विश्वास दिलाने के लिये टेलीविजन पर दिखाई जा रही है। भारत के राजा ने टी.वी. पर खोजा की लाश भी देख ली।

अब अमरीका के राजा की बात मानना ज़रूरी नहीं था। भारत का राजा राजी-राजी राजमहल में आया।

दाल-भात खाकर वह सोने ही वाला था कि शाम का अखबार आ

गया। अखबार के पहले पन्ने पर ख़ोजा नसरुद्दीन की फोटो छपी थी। समाचार था कि ख़ोजा ने राजस्थान की सीमा से भारत में प्रवेश कर लिया है।

भारत के राजा की नींद उड़ गई। उसने आदेश दिया कि "ख़ोजा नसरुद्दीन को आगे बढ़ने से रोको। उसे पकड़ो। ज़मीन में दफना कर ऊपर हाथी, घोड़े और सड़क बनाने का इंजन चला दो।"

राजा का हुकुम सर आँखों पर बिठा कर भारत के जांबाज सिपाही ख़ोजा नसरुद्दीन को मिटाने निकल पड़े।

❑❑

ख़ोजा नसरुद्दीन के भारत आने की खबर मिलते ही विश्व बंधुत्व विरोधी परिषद ने भारत बंद का ऐलान कर दिया। विदेशी घुसपैठिये को भारत से भगाने की शपथ ली गई। इस काम को करने के लिये रथ यात्रा निकालने का प्रण किया गया।

❑❑

ओशो-रजनीश के भक्तों ने ख़ोजा के भारत आगमन को भारत के लिये शुभ संकेत बताया। तो सूर्य-ग्रहण और दीपावली के साथ-साथ पड़ने और ख़ोजा के भारत आने को

ज्योतिषियों ने भारत के लिये अशुभ बताया।

बहुत ही जाने माने विद्वान संत रामदास ने अखबार वालों को कहा-ख़ोजा नसरुद्दीन का आना और देवताओं का दूध पीना भारत में, राजनैतिक उथल-पुथल का संकेत है।

सरकार से जुड़े कुर्सी के भगत हिन्दू मुसलमान सभी ने एक बयान में कहा कि ख़ोजा नसरुद्दीन का भारत आना भारत के राजा की विफलता है। लगता है राजा खुद इस घटना का फायदा उठाकर आपातकाल लगाना चाहता है।

❑❑

धनसत्ता अखबार के सम्पादक ने ख़ोजा नसरुद्दीन के भारत प्रवेश पर अपने सम्पादकीय में लिखा-यह तो होना ही था। यह न होता तो हैरत होती। आखिरकार वह भारत में आ ही गया। जैसे टेनिस का खिलाड़ी बोरिस बेकर सेमीफाइनल में आ ही जाता है। ख़ोजा का आना इतना चिंता में नहीं डालता, जितना कि भारत का ख़ोजा को लेकर चिंता में पड़ना चिंता में डालता है।

एक गाँव की सरपंच विमला कुमारी रोटी बना रही थी और उनके पतिदेव दारू पी रहे थे। उस समय राजकीय पाठशाला के हेडमास्टर ने आकर उन्हें चेताया कि देश का शत्रु देश में आ चुका है। बहू घूंघट की ओट से उसे जब भी देखो, मुझे सूचित करो।

कहने का मतलब यह है कि ख़ोजा के आने की खबर से

घर घर में बातें होने लगी। गाँव की चौपालों पर ख़ोजा को लेकर गप्पें हाँकने वालों के दिन लौट आए।

लेकिन ख़ोजा नसरुद्दीन कहाँ था? वह भारत में था तो कहाँ था? किस भेस में था? किस रूप में था? क्या उसका

प्यारा गधा भी उसके साथ ही था?

क्या वह अब नए जमाने के हिसाब से कपड़े पहनता था? क्या वह बहुत बूढ़ा नहीं हो गया था? उसे कैसे पहचानें? सबको, हर दूसरा अजनबी ख़ोजा ही नजर आने लगा।

पुलिस वालों ने तीन पागलों को ख़ोजा होने के शक में पकड़ लिया। यही नहीं दो कवियों, पाँच शायरों और एक चुनाव में हारे हुए विधायक को भी धर दबोचा। लेकिन इनमें से कोई ख़ोजा नहीं था।

ख़ोजा को खोजने के लिये खोजी कुत्तों की मदद भी ली गई –लेकिन कुत्तों पानी के पास जाकर वापस हो जाते थे। ऑफिसरों ने अनुमान लगाया कि ख़ोजा पानी के भीतर हो सकता है। पानी में लंगर डाले गए। गोताखोरों ने गोते लगाए।

एक गोताखोर दस दिन पहले एक दूसरे समुदाय के छोकरे के साथ भाग गई लड़की का बटवा लेकर बाहर आया। थक हार कर इस नतीजे पर पहुँचा गया कि हो न हो वह छोकरा ही ख़ोजा हो सकता है।

छोकरे का हुलिया अख़बार में छापा गया। पर दूसरे दिन छोकरे और छोकरी की लाशें पानी के ऊपर तैरती मिलीं। तो फिर ख़ोजा नसरुद्दीन कहाँ गया? जमीन खा गई या आसमान निगल गया?

ख़ोजा नसरुद्दीन अमर था। उसे नहीं मानने वाले भी मानते थे कि ख़ोजा अमर है। वह कभी बूढ़ा नहीं होता। वह

तो खैर बूढ़ा नहीं होता, लेकिन सुना है कि उसका गधा भी बूढ़ा नहीं होता।

❑❑

इन तमाम बातों से लापरवाह ख़ोजा नसरुद्दीन राजस्थान के एक गाँव में साथिन के घर पहुँचा। साथिन को ख़ोजा ने खबर भेज दी थी। साथिन ने ख़ोजा के गधे को कालू कुम्हार के गधों के साथ बाँध दिया।

नहा-धोकर ख़ोजा ने खाना खाया। खाना खाकर ख़ोजा साथिन से बोला, बहिन भारत आने की बड़ी तमन्ना थी।

आज पूरी हो गई। अमरनाथ जी की जियारत करनी है। ग़रीब नवाज की कदम बोसी करूँगा और फिर पूरा भारत घूम-घूम कर देखना है।

साथिन बोली, मेरे भाई, भारत में तुम्हारा स्वागत है। तुम जो चाहे करना, लेकिन सावधान रहना।

यह देश धर्म, आस्था और रूढ़ियों का गुलाम है। जात-पात, छूत-अछूत के यहाँ बड़े-बड़े पाखण्ड हैं। यहाँ दूध की नदियाँ तो नहीं बहतीं पर देवता आज भी दूध पीते हैं। यहाँ शिक्षा का घोर अन्धेरा है। यहाँ दुष्टों का बोलबाला है। यहाँ का भगवान, खुदा, राम सिर्फ पैसा है।

लेकिन तुम किसी मामले में टाँग मत अड़ाना। सारी दुनिया से बच-बचाकर यहाँ आए हो, लेकिन याद रखना जरा से चूकोगे तो यहाँ की पागल भीड़ से नहीं बच सकोगे। यहाँ के लोग पकड़ना जानते हैं, छोड़ना नहीं जानते। लेना जानते हैं, देना नहीं जानते।

साथिन की बात सुन कर ख़ोजा नसरुद्दीन ने डकार ली। डकार लेकर सो गया।

❑❑

सुबह जल्दी उठकर गधे के पास गया और बोला, कुछ वजह ही ऐसी है दोस्त कि तु हें साथ नहीं ले जा सकूंगा। तुम थोड़े दिन यहीं कालू कुम्हार के गधों के साथ रहो। बस मैं थोड़े ही दिनों में वापस लौट रहा हूँ।

गधा समझदार था। बस उसकी जात ही गधों की जात थी।

गधे से जुदा होकर साथिन से रोटी की पोटली ली और पैदल ही चल पड़ा। रेलवे स्टेशन गाँव से थोड़ा दूर था।

❑❑

रेलवे स्टेशन पर भारी भीड़ थी। पता चला कि ट्रेन आज नहीं आयेगी। नसरुद्दीन दौड़कर बस अड्डे पर पहुँचा। बस मिल गई। लेकिन बस का ड्राइवर दारू पीकर पाड़े से लड़ पड़ा था इसलिये उसकी दो पसलियाँ टूट गई थीं। बस तैयार खड़ी थी पर उसे चलाने वाला कोई नहीं था। बस का मालिक पान की दूकान पर खड़ा हुआ बीड़ी पीता जाता था और रोता जाता था। ख़ोजा ने बस मालिक से पूछा, ड्राइवर चाहिए? बस का मालिक बोला, कहां है ड्राइवर? एक था वह भी बहादुरी दिखाने के चक्कर में हस्पताल में भर्ती पड़ा है।

ख़ोजा बोला, मैं हूँ ड्राइवर। यह मेरा लाइसेंस।

❑❑

बस खटारा थी पर चलने में उस्ताद थी। रास्ता पहचानती थी। ख़ोजा के गधे की ही तरह समझदार थी।

बस का मालिक सवारियों से पैसे लेकर इंजन पर आकर बैठ गया, जिस पर लिखा था मुझ पर ना बैठें।

–''कैसी है?'' बस का मालिक बोला।

–''कौन?'' ख़ोजा बोला ।

–''बस।'' बस का मालिक बोला।

–मेरे गधे जैसी है।

बस का मालिक राजी हो गया। उसने यह भी नहीं पूछा कि तुम्हारा गधा कहाँ है। फिर बस का मालिक बोला – तुम्हारा नाम क्या है ?

ख़ोजा बोला–मेरा नाम मुल्ला है।

बस का मालिक राजी हो गया। फिर बोला–प्यारे मुल्ला तुम कहाँ के हो ?

ख़ोजा बोला–मैं ज़मीन का हूँ।

बस का मालिक राजी हो गया। फिर बोला–प्यारे मुल्ला, तुमने शादी की?

ख़ोजा बोला–नहीं की।

बस का मालिक राजी हो गया। फिर बोला–प्यारे मुल्ला, शादी क्यों नहीं की?

ख़ोजा बोला–अब करूंगा।

बस का मालिक दु:खी हो गया और चुप हो गया।

❑❑

बस छोड़ कर ख़ोजा ने दूसरी बस पकड़ी और शहर आ गया।

मोहर्रम का महीना था। दस तारीख थी। यह महीना मुसलमान बहुत पवित्र मानते हैं। इस महीने में हसन–हुसैन करबला के मैदान में यजीद से लड़ते हुए शहीद हो गए थे।

ख़ोजा ने देखा कि ताजिये निकाले जा रहे हैं। उसने एक आदमी से पूछा–यह क्या है? यह काहे का जुलूस है।

आदमी ने बताया कि यहाँ इमाम हुसैन की याद में ताजिये निकाले जा रहे हैं।

ख़ोजा हैरान हो गया। उसने चिल्ला कर कहा, यह हराम है। यह इस्लाम का हिस्सा नहीं है। यह पैसों की बर्बादी है। बस फिर क्या था। खोजा की तरफ भीड़ ने पलटकर देखा। ख़ोजा को भीड़ की आँखों में पागलपन नजर आया। वह समझ गया कि जान प्यारी है तो भाग, वरना खड़ा होकर तमाशा देख। एक मुक्का ख़ोजा की नाक पर पड़ा। ख़ोजा चिल्लाया–खुदा की कसम, इन पैसों से एक मदरसा बन सकता है। दूसरा मुक्का पड़ा। ख़ोजा चिल्लाया–इमाम हुसैन

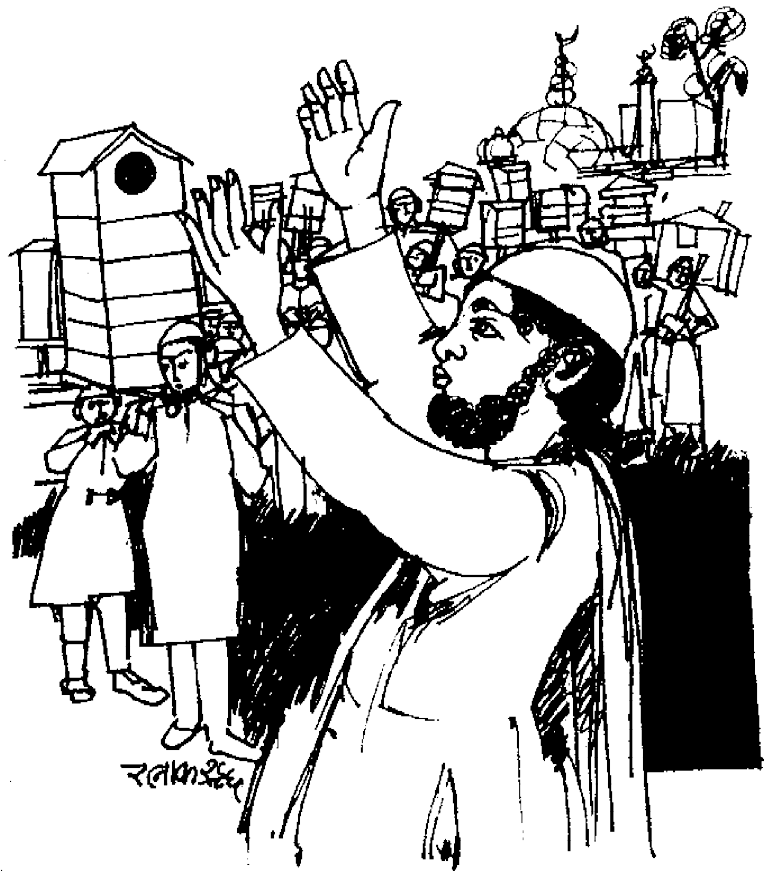

की कसम, इन ताजियों के पैसों से दस बेवाओं को सिलाई मशीनें दिलाई जा सकती है।

तीसरा मुक्का पड़ा।

ख़ोजा दहाड़ कर बोला–कसम करबला के शहीदों की, इन ताजियों के पैसों से यतीम बच्चों के लिए किताबें खरीदी जा सकती हैं।

चौथा मुक्का पड़ा।

ख़ोजा चिल्ला उठा–ऐ मेरे भाइयो, मुझे यूँ अकेला देखकर इतने बेभाव के मुक्के ना मारो। मैं झूठ नहीं कह रहा हूँ। अरे, इन ताजियों के पैसों से गरीब बच्चों के स्कूल की फीस भरी जा सकती है। पाँचवा मुक्का ख़ोजा की तरफ लपका। ख़ोजा दौड़ा। मुक्के भी ख़ोजा के पीछे दौड़े। भगदड़ मच गई। कोहराम खड़ा हो गया। ख़ोजा भागता जाता था और सोचता जाता था कि आगे कहीं गली बंद न हो।

❑❑

भागते दौड़ते ख़ोजा नसरुद्दीन श्मशान घाट पर चला आया। वहाँ एक मुर्दे के साथ उसकी जिंदा औरत सती होने वाली थी। औरत को शायद कोई नशा पिलाया गया था। वह झूम रही थी। लोग जय सती माता के नारे लगा कर आसमान गुंजा रहे थे।

ख़ोजा ने पूछा–भाई, यह क्या मामला है ? आदमी बोला–माता सती हो रही है।

ख़ोजा ने पूछा–कौन है यह माता ?

आदमी बोला–यह मुर्दे की विधवा है।

ख़ोजा बोला–यह तो जिंदा है, फिर इसे क्यों जलाया जा रहा है ?

आदमी बोला–इसे जलाया नहीं जा रहा है। यह अपनी मर्जी से सती हो रही है।

ख़ोजा ने पूछा–यह क्यों सती हो रही है ? क्या इसके कोई औलाद नहीं है ?

आदमी बोला–नहीं, औलाद नहीं है। अकेली औरत अपने आदमी की जमीन जायदाद की जीवन भर विधवा रह कर कैसे रखवाली कर सकती है ? इसलिये वह सती हो रही है।

ख़ोजा बोला–क्या विधवा की दूसरी शादी नहीं हो सकती ?

आदमी बोला–कमीने, सूअर, पाजी ! फिर आदमी ने हल्ला मचा दिया।

– अरे ओ, सती माता के भक्तों, यह आदमी सती माता के लिए अपमानजनक बातें कर रहा है।

भक्तों की भीड़ ख़ोजा पर टूट पड़ी। ख़ोजा जान बचाकर भागा। भागता जाता और सोचता जाता : अल्लाह जरूर उस मासूम औरत को बचा लेगा।

❑❑

भागते दौड़ते दस मील दूर, ख़ोजा एक पेड़ के नीचे पहुँचा। वहाँ एक जवान लड़की बैठी रो रही थी।

ख़ोजा ने पूछा–बहिन, तुम कौन हो? क्यों रो रही हो? तुम्हारा घर कहाँ है? तुम्हारा नाम क्या है?

लड़की बोली–तुमने मुझे बहिन कहा है इसलिये हे मेरे भाई सुनो–मेरा नाम सावित्री है। मैं शादीशुदा हूँ। मेरा मरद मुझे छोड़ कर दूसरी शादी करने जा रहा है।

ख़ोजा ने कहा–लेकिन बहिन, तुम हिन्दू हो। तुम्हारा मरद तुम्हारे होते हुए दूसरी शादी कैसे कर सकता है?

सावित्री बोली–वह धरम बदल कर शादी कर रहे हैं।

ख़ोजा ने पूछा–लेकिन उस लड़की का धरम क्या है?

सावित्री बोली–वह भी हिन्दू है। पर शादी करने के वास्ते दोनों मुसलमान बन रहे हैं।

ख़ोजा ने कहा–कोई भी काजी यह निकाह नहीं करवायेगा। तुम बेफिक्र रहो बहिन।

सावित्री बोली–एक शराबी काजी उन्हें निकाह पढ़ा रहा है।

ख़ोजा ने कहा–जो शराब पीता है, वह काजी ही नहीं है। बल्कि वह तो सच्चा मुसलमान भी नहीं है। ऐसी मतलब की शादी के लिए इस्लाम का इस्तेमाल गुनाह है। छोटे–छोटे गुनाह करने के लिए भी कोई आदमी अपने मजहब को छोड़ कर दूसरे मजहब को अपनाता है तो वह आदमी सबसे बड़ा ज़ालिम है।

सावित्री बोली–मेरे भाई, मेरी रक्षा करो। ख़ोजा ने कहा–जरूर तुम्हारी मदद करूंगा। आओ मुझे अपने घर का पता बताओ। क्या तुम्हारे माँ बाप, भाई–बहन कोई भी नहीं है?

सावित्री बोली–मेरा सिर्फ भगवान है।

ख़ोजा बोला–बेशक, अल्लाह मजलूमों के ही साथ है।

उस काजी को पकड़ कर ख़ोजा ने उसे जो झाड़ पिलाई तो काजी ने कान पकड़े और माफी मांग कर अपने घर चला गया।

इस बात को सुनकर सावित्री का मरद फूं फां करता हुआ आया और ख़ोजा का गिरेबान पकड़ कर बोला–तू मुसलमान नहीं है। तू मुसलमान होता तो चुप रहता और इस शादी में शामिल होता।

ख़ोजा ने कहा–मैं मुसलमान हूँ, इसीलिये ऐसी नापाक शादी के खिलाफ हूँ। और अगर यह मेरी हिन्दू बहिन का मामला ना होता तो मैं तेरे जैसे गुनहगार का खून कर देता।

–मेरा खून कर देता? अरे मरदूद, देख अब मैं तेरे टुकड़े बटके करवाता हूँ?

ख़ोजा को पकड़ कर पेड़ से बाँध दिया गया। फिर सावित्री का मरद बोला–बंधा रह। सुबह तक भूखा प्यासा। कल तेरा तिया पांचा करेंगे।

यह कह वह और उसके दोस्त चले गये। भूखा, प्यासा ख़ोजा पेड़ से बंधा हुआ था, इसलिये गाना गाने लगा :

मुझको लगी है
भूख और प्यास
कोई नहीं मेरे पास
किससे रखूँ मैं आस
मेरा गधा भी नहीं मेरे पास।

उसका गाना सुनकर कोई भूत पलीत भी उसे छुड़ाने नहीं आया। ख़ोजा ने सोचा सर्दी की रात में तो दिल की धड़कनें भी जम सकती हैं। वह जोर जोर से गाने लगा। किस्मत से चरणदास चोर नाम का मशहूर चोर उधर से गुजर रहा था। उसने ख़ोजा का गाना सुना तो उसे अपना बचपन याद आ गया। उसका बाप भी सर्दी की रातों में ऐसे ही गाता था। उसने ख़ोजा को खोल दिया। ख़ोजा ने उसे दुआएं दी। चोर अपने रास्ते चला गया तो ख़ोजा ने भी अपनी राह ली।

❑❑

एक झरने के किनारे बड़ के पेड़ के नीचे एक काला आदमी एक आठ साल के बच्चे के माथे पर तिलक लगा रहा था। तिलक लगा कर उसने बच्चे के गले में फूलों का हार पहनाया।

ख़ोजा ने यह देखा तो समझ गया कि यह काला आदमी लड़के की बलि देने वाला है। अफ्रीका के कबीलों में ख़ोजा ने यह नीच काम देखा था।

ख़ोजा ने काले को ललकारा–ऐ कमीने आदमी तू क्या इस बच्चे की बलि देने वाला है?

आदमी ने कहा–कोई शक?

ख़ोजा बोला–तू यह घिनौना पाप क्यों कर रहा है?

काला बोला–इसकी बलि से मैं अमीर हो जाऊंगा।

ख़ोजा ने पूछा–कैसे?

काला बोला–मेरी खाट के नीचे सोने की मोहरों से भरा एक चरू है। जो फर्श के नीचे दस हाथ अन्दर है। बिना बलि के वह चरू निकालूंगा तो मोहरे सांप बिच्छू बन जाएंगे–इसीलिये बलि देना जरूरी है।

''तुम अमीर क्यों बनना चाहते हो?'' ख़ोजा ने काले से पूछा।

''मैं अपनी कहानी पर फिलम बनाऊंगा। उस फिलम में मैं हीरो बनूंगा और माधुरी दीक्षित हीरोइन बनेगी।''

यह कहकर काला हँसा।

''लगता है तुम नींद में हो। तुम्हारा यह सपना टूटने वाला है।''

ख़ोजा की बात पर ध्यान न देकर काला बोला–''चुपचाप बैठ जा। वर्ना माँ काली नाराज हो जायेगी।'' ख़ोजा ने फालतू बहस करना ठीक नहीं समझा। एक बड़ा पत्थर उठाया। निशाना लगाकर फेंका। पत्थर सीधा काले के माथे पर लगा। काला बेहोश हो गया। ख़ोजा ने बच्चे को गोद में उठाया और पास वाली बस्ती की तरफ चल पड़ा।

बस्ती के बाहर बच्चे के माँ, बाप–दादा–दादी और गाँव वाले बैठे हुए रो रहे थे। सबने बच्चे को ज़िंदा देखा तो हँसने लगे। ख़ोजा उनकी खुशी देख कर खुश हो गया। इतने में बच्चे का बाप ख़ोजा के पास आया और बोला–''बच्चे की टोपी कहाँ है?''

ख़ोजा नसरुद्दीन समझ गया कि उसे टोपी का चोर बता कर पुलिस में पकड़वाया जायेगा। वह वहाँ से भी भागा।

भागते भागते उसने सोचा अब पता लगा इस देश से सिकन्दर क्यों लौट गया। अभी तो भारत के एक राज्य के एक शहर में ही हूँ और इतनी दुर्गत! लौट जा ख़ोजा कहीं और।

ख़ोजा छिपता–छिपाता बस अड्डे पर आया। बस का मालिक पान वाले की दूकान पर खड़ा बीड़ी पीता जाता था और रोता जाता था। ख़ोजा को देखा तो राजी हो गया और चिल्ला कर बोला–''प्यारे मुल्ला।''

दोनों गले मिले। इस तरह ख़ोजा नसरुद्दीन अपनी यात्रा अधूरी छोड़कर भारत से वापस लौट गया।

❑❑❑